अध्याय 7

एज्रा, एक शास्त्री: उसकी यात्रा (भाग 1)

अध्याय 6 और अध्याय 10 से लेकर दस तक, बिना किसी समस्या के लगभग साठ वर्ष बीत गए।[1] निश्चित रूप से, यहूदा में घटनाएं घटित हुई थीं, जो प्रभावित लोगों के लिए महत्वपूर्ण थीं, परन्तु प्रेरित इतिहासकार के लिए यह आवश्यक नहीं था कि वह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उनका उल्लेख करें। इसलिए, एज्रा ने अपनी पुस्तक का दूसरा भाग 458 ई.पू. में उसके यरूशलेम लौटने और जो सुधार उसने किए थे उनके साथ आरम्भ किया।

एज्रा की कहानी का यह भाग 7:1-8:36 में तीन भागों में बताया गया है: (1) राजा के एज्रा को यरूशलेम जाने की अनुमति देने और उसके वहाँ पहुँचने का तृतीय पुरुष में वर्णन (7:1-10; 8:35, 36), (2) एज्रा को जाने की अनुमति देने वाला राजा का पत्र (7:11-26), और (3) एज्रा द्वारा यरूशलेम की अपनी यात्रा का प्रथम पुरुष वर्णन (7:27-8:34)।

एज्रा की यरूशलेम की ओर यात्रा (7:1-10)

[1]इन बातों के बाद अर्थात् फारस के राजा अर्तक्षत्र के दिनों में, एज्रा बेबीलोन से यरूशलेम को गया। वह सरायाह का पुत्र था। सरायाह अजर्याह का पुत्र था, अजर्याह हिल्किय्याह का, [2]हिल्किय्याह शल्लूम का, शल्लूम सादोक का, सादोक अहीतूब का, अहीतूब अमर्याह का, अमर्याह अजर्याह का, [3]अजर्याह मरायोत का, [4]मरायोत जरह्याह का, जरह्याह उज्जी का, उज्जी बुक्की का, [5]बुक्की अबीशू का, अबीशू पीनहास का, पीनहास एलीआज़ार का और एलीआज़ार हारून महायाजक का पुत्र था। [6]यही एज्रा मूसा की व्यवस्था के विषय, जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी, निपुण शास्त्री था। उसके परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो उस पर रही, इसके कारण राजा ने उसका मुँह माँगा वर दे दिया। [7]कुछ इस्राएली, और याजक, लेवीय, गवैये, और द्वारपाल, और मन्दिर के सेवकों में से कुछ लोग अर्तक्षत्र राजा के सातवें वर्ष में यरूशलेम को गए। [8]वह राजा के सातवें वर्ष के पाँचवें महीने में यरूशलेम को पहुँचा। [9]पहले महीने के पहले दिन को वह बेबीलोन से चल दिया, और उसके परमेश्वर की कृपादृष्टि उस पर रही, इस कारण पाँचवें महीने के पहले

दिन वह यरूशलेम को पहुँचा। [10]क्योंकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ जान लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था।

एज्रा के नेतृत्व का वर्णन यहूदा की यात्रा के सारांश के साथ आरम्भ होता है, इसके बाद कई विवरण मिलते हैं।

आयतें 1-5. इन बातों के बाद यहाँ पर कहानी घटित हुई - जो यह कि, एज्रा 1-6 में दर्ज की गई घटनाओं के बाद। चूंकि, एज्रा की वापसी का वर्ष "अर्तक्षत्र राजा के सातवें वर्ष में" (7:7) था, और चूकि **अर्तक्षत्र** प्रथम ने 465 से 424 ई.पू. के लगभग राज्य किया था, यह वर्ष लगभग 458 ई.पू.[2] था - 516 ई.पू. में मन्दिर के पूरा होने के लगभग साठ वर्ष बाद। पाठक को इस विषय सूचित करने के बाद कि वह जिस घटना से वर्णन करने वाला था वह "कब" हुई थी, लेखक ने इन घटनाओं के विषय में अन्य प्रश्नों का उत्तर देना आरम्भ कर दिया।

कौन यरूशलेम **को गया? एज्रा**। उसका पहला परिचय उसके पारिवारिक सम्बन्धों के द्वारा दिया गया है। सोलह पीढ़ियों के तक उसके वंश का पता लगाया गया है। जैसा कि बाइबल में पाई जाने वाली अन्य वंशावलियों में (जैसे कि मत्ती 1 में यीशु की) है, कुछ पीढ़ियों को एज्रा की वंशावली से बाहर रखा गया है। कभी-कभी भाव **का पुत्र** का अर्थ होता है "वंशज।" यह सम्भव है कि एज्रा के पिता का नाम **सरायाह** था, जिसका नाम हाल में ही शहीद हुए याजक के समान था। हालाँकि, उसका पिता यरूशलेम के पतन में बेबीलोनियों द्वारा मारा गया महायाजक नहीं हो सकता था (2 राजा. 25:18-21), क्योंकि यह घटना एज्रा की वापसी से लगभग 130 वर्ष पहले हुई थी। यदि उस सरायाह का वर्णन यहाँ पर किया गया है, जिसकी सम्भावना है (देखें 1 इतिहास 6:14), तो एज्रा और उसके बीच कई पीढ़ियों को छोड़ दिया गया है। चूकि सोलह पीढ़ियाँ हारून[3] तक पहुँचने वाली सदियों तक फैली हुई हैं, इसलिए इस वंशावली (बाइबल में अन्यों के समान ही) को पूरा करने की मंशा नहीं थी। इसके बजाय, यह एज्रा के याजक के रूप में कार्य करने का चित्रण सीनै में स्थापित हारून के याजकीय समाज की निरंतरता के रूप में करती है। वंशावली **पीनहास**, **एलीआज़ार ... और ... हारून महायाजक** के साथ समाप्त होती है।

इस वंशावली के दो कार्य प्रभावी हैं: इसकी लम्बाई और इसका आरम्भ। आम तौर पर, किसी व्यक्ति के लिए दी गई वंशावली की लम्बाई बाइबल की कहानी में उसका महत्व बताती है। एक ऐसी वंशावली जो सोलह पीढ़ियों तक जाती है, दुर्लभ है। इसके अलावा, यह तथ्य कि एज्रा अपने वंश का हारून, मूसा के भाई और पहले महायाजक तक पता लगा सकता है, यह उसकी प्रमुखता का संकेत करता है। उसका वंश भी संकेत करता है कि वह स्वयं एक याजक था, एक तथ्य जिसे बाद में बताया गया है। हारून से उसका सम्बन्ध मूसा और हारून के दिनों में घटने वाली घटनाओं को उसके जीवन से जोड़ता है। यह फिर से बताता है कि बेबीलोन से लौटने में यहूदियों ने जो अनुभव किया वह एक तरह का दूसरा निर्गमन

था।

आयत 6. एज्रा का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि वह **मूसा की व्यवस्था के विषय, जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी, निपुण शास्त्री था**। शास्त्री वे पुरुष थे जिन्होंने पवित्रशास्त्र की नकल की। व्यवस्था पर उनके काम के माध्यम से, शास्त्रियों को इस विषय पर विशेषज्ञ के रूप में जाना जाता था और अंततः शिक्षकों के रूप में माना जाता था। पाठ कहता है कि एज्रा न केवल "एक शास्त्री" था, बल्कि "व्यवस्था में निपुण शास्त्री" भी था - जिसने परमेश्वर की व्यवस्था समझने और सिखाने की क्षमता में अन्य शास्त्रियों से आगे निकल गया था। यह एक और अनुस्मारक है कि, एज्रा के समय में, "मूसा की व्यवस्था" पहले से ही अस्तित्व में थी और इसे कानून के रूप में माना जाता था "जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दिया था।"

क्या एज्रा के एक "निपुण शास्त्री" के रूप में वर्णन का अर्थ है कि "वह फारसी नौकरशाही में यहूदी मामलों के लिए राज्य सचिव हो सकता है"[4]? यह संभव है, क्योंकि अलग-अलग अवधि में शास्त्रियों ने विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं निभाईं। एडविन एम. यामूची ने टिप्पणी की और कहा कि कुछ शास्त्री (जैसे कि शापान) ने राजाओं (2 राजा. 22:3) के सचिवों के रूप में कार्य किया, जबकि अन्य (जैसे बारूक, यिर्मयाह का शास्त्री) ने श्रुतलेख (यिर्म. 36:32) लिया। बन्धुआई के समय से, "शास्त्री वे विद्वान थे जिन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया था और शिक्षा दिया करते थे।" यीशु के दिनों में, उन्हें "रब्बी" कहा जाता था।[5] इस तथ्य को देखते हुए कि एज्रा को फारसी राजा द्वारा पहचाना और सम्मान दिया गया था, यह हो सकता है कि उसने राजा के दरबार में एक आधिकारिक पद धारण किया था।

एज्रा बेबीलोन से यहूदा क्यों गया? शब्द इस प्रश्न के चार उत्तर प्रदान करता है; पहले तीन आयत 6 में पाए जाते हैं, जबकि अन्तिम आयत 10 तक प्रकट नहीं होता। सबसे पहले, **गया** क्योंकि **राजा ने मुँह माँगा वर** दिया था। एज्रा, ने जिस भी कारण से, राजा की दृष्टि में अनुग्रह पाया, उसने उसे यहूदा के बन्धुआ लोगों के समूह का नेतृत्व करने की अनुमति दी। दूसरा, और सबसे महत्वपूर्ण, वह "गया" क्योंकि **उसके परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो उस पर रही**। यद्यपि फारसी राजा ने निर्णय लिया था, परमेश्वर उस निर्णय के पीछे था, जिसने राजा को प्रभावित किया था (शायद राजा के जाने बिना ही)। परिणाम स्वरूप, एज्रा का यहूदा में जाना परमेश्वर की इच्छा और उसकी शक्ति के अनुसार था। एक तीसरा उत्तर यह है कि एज्रा ने यहूदा में जाने की अनुमति का **वर** माँगा था, और उसे वह अनुमति दी गई। राजा की उदारता, जो उसके पत्र में स्पष्ट है, जो एज्रा द्वारा किए गए एक अनुरोध का उत्तर था। स्पष्ट है, एज्रा को अर्तक्षत्र द्वारा बहुत सम्मान दिया गया था।

आयत 7. एज्रा ने और क्या किया? अगली चार आयतों में पहले से कही गई बातों का विवरण है। यह संकेत करने के बाद कि एज्रा "बेबीलोन से चला गया" (7:6), लेखक ने कहा कि वह अपने साथ कई अन्य लोगों को ले गया: **कुछ इस्राएली, और याजक, लेवीय, गवैये, और द्वारपाल, और मन्दिर के सेवकों में से**

कुछ लोग अर्तक्षत्र राजा के सातवें वर्ष में यरूशलेम को गए। इन श्रेणियों के अन्य लोग जरुब्बाबेल के साथ लौटे थे (2:1-70)।

आयतें 8, 9. विवरण कहता है कि दल ने राजा के सातवें वर्ष के पहले महीने के पहले दिन बेबीलोन को छोड़ दिया राजा के **सातवें वर्ष के ... पाँचवें महीने के पहले दिन वह यरूशलेम को पहुँचा**। इसलिए, यात्रा ने एज्रा के दल का लगभग चार महीने का समय लगा। बेबीलोन और यरूशलेम के बीच की सीधी दूरी लगभग पाँच सौ मील है। हालाँकि, लोगों ने अरब के रेगिस्तान को पार करने के बजाय, उत्तर-पश्चिम की ओर यूफ्रेट्स नदी और फिर दक्षिण में यरूशलेम की यात्रा की, जो लगभग नौ सौ मील की दूरी थी। अतिरिक्त दूरी के साथ भी, चार महीने एक लम्बे समय की तरह लगते हैं। एज्रा के दल की अपेक्षाकृत धीमी गति को एक लम्बित आरम्भ के अलावा बच्चों और बुजुर्गों की उपस्थिति से समझाया जा सकता है (8:15, 21, 31)।[6] हालांकि यह कोई कठिन और खतरनाक यात्रा नहीं थी (8:31), यह बंधुआई से आए इस समूह ने इसे सफलतापूर्वक पूरा किया **परमेश्वर की कृपादृष्टि** एज्रा पर थी।

आयत 10. एज्रा के नेतृत्व का सर्वेक्षण इस प्रश्न के चौथे उत्तर के साथ समाप्त होता है कि "एज्रा यहूदा क्यों गया?" **एज्रा** यरूशलेम गया (דָּרַשׁ, *दाराश;* शाब्दिक तौर पर, "खोज"; KJV) **एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ जान लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था।** एज्रा आदर्श याजक और शास्त्री था।[7] उसका उद्देश्य केवल परमेश्वर के नियम को सीखना नहीं था, बल्कि इसे मानना और दूसरों को इसका पालन करना सिखाना था। अपने मन में इन उद्देश्यों के साथ, उसने राजा से अनुमति मांगी, उस अनुमति को प्राप्त किया, और यरूशलेम की लम्बी यात्रा की।

अर्तक्षत्र की एज्रा को आज्ञा (7:11-26)

अरामी दस्तावेज़ की एक प्रति जिसने एज्रा को अपने लक्ष्य पर निकलने की अनुमति दी, उसे 7:11-26 में सम्मिलित किया गया है।

जाने की अनुमित (7:11-13)

[11]जो चिट्ठी राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा याजक और शास्त्री को दी थी जो यहोवा की आज्ञाओं के वचनों का, और उसकी इस्राएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था, उसकी नकल यह है: [12]"एज्रा याजक के नाम जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण शास्त्री है, अर्तक्षत्र महाराजाधिराज की ओर से। [13]मैं यह आज्ञा देता हूँ, कि मेरे राज्य में जितने इस्राएली और उनके याजक और लेवीय अपनी इच्छा से यरूशलेम जाना चाहें, वे तेरे साथ जाने पाएँ।"

आयत 11. यह आयत, जो इब्रानी में लिखी गई है, अर्तक्षत्र पत्र का परिचय देती है, जो अरामी में लिखा गया है (जैसा कि 4:8-6:18 में पाया जाने वाले अन्य

आधिकारिक दस्तावेज थे)। एज्रा का फिर से परिचय एक याजक और एक ऐसे मनुष्य के रूप में दिया गया है **जो यहोवा की आज्ञाओं के वचनों का, और उसकी इस्राएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था।** "शास्त्री" क्रिया का एक आंशिक रूप अनुवाद करता है סָפַר (*सपार*); अन्य संस्करणों ने इसे "शास्त्री" (KJV), "विशेषज्ञ" (NKJV), या "विद्वान" (NRSV) के रूप में प्रस्तुत किया। सपर संज्ञा סֵפֶר (*सॅपर*) से सम्बन्धित है, जो आयत 11 में भी दिखाई देती है और इसका अर्थ है "शास्त्री"।

आयत 12. पत्र **अर्तक्षत्र महाराजाधिराज** या "महाराज" **की ओर से** आया था (देखें यहेजकेल 26:7; दानिय्येल 2:37)। उसने इसे **एज्रा** को सम्बोधित किया था, जिसका वर्णन फिर से **याजक** के और **स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण शास्त्री** के रूप में किया गया है। परिचय एक स्पष्ट अभिवादन के साथ समाप्त होता है: "**पूर्ण शास्त्री।**" अभिवादन के अन्तिम शब्द का अनुवाद किस प्रकार किया जाना चाहिए, इसके प्रति कुछ प्रश्न हैं। यद्यपि NASB में "पूर्ण शांति" है, "शांति" तिरछे अक्षरों में है, यह दर्शाता है कि यह मूल शब्द में नहीं था परन्तु अनुवादकों द्वारा वाक्यांश का अर्थ पूरा करने के लिए जोड़ा गया था। स्पष्ट है, अभिवादन "शान्ति" गलती से एक शास्त्री द्वारा छोड़ दिया गया था और इसे 5:7 ("कुशल क्षेम सब प्रकार से हो")[8] के अनुरूप जोड़ा जाना चाहिए।

आयत 13. जितने इस्राएली एज्रा के साथ **यरूशलेम** जाना चाहते थे जा सकते थे। पुस्तक ने पहले ही उल्लेख किया है कि कुछ लोग एज्रा के साथ उसकी यात्रा पर गए थे, और यह बाद में उस समूह को बनाने वाले लोगों के विषय में अधिक बताता है।

एज्रा का लक्ष्य (7:14-20)

[14]तू तो राजा और उसके सातों मंत्रियों की ओर से इसलिये भेजा जाता है, कि अपने परमेश्वर की व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है, यहूदा और यरूशलेम की दशा जान ले, [15]और जो चाँदी-सोना, राजा और उसके मंत्रियों ने इस्राएल के परमेश्वर को जिसका निवास यरूशलेम में है, अपनी इच्छा से दिया है, [16]और जितना चाँदी-सोना समस्त बेबीलोन प्रान्त में तुझे मिलेगा, और जो कुछ लोग और याजक अपनी इच्छा से अपने परमेश्वर के भवन के लिये जो यरूशलेम में है देंगे, उसको ले जाए। [17]इस कारण तू उस रुपये से फुर्ती के साथ बैल, मेढ़े और मेम्ने उनके योग्य अन्नबलि और अर्घ की वस्तुओं समेत मोल लेना और उस वेदी पर चढ़ाना, जो तुम्हारे परमेश्वर के यरूशलेम वाले भवन में है। [18]जो चाँदी-सोना बचा रहे, उस से जो कुछ तुझे और तेरे भाइयों को उचित जान पड़े, वही अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना। [19]तेरे परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये जो पात्र तुझे सौंपे जाते हैं, उन्हें यरूशलेम के परमेश्वर के सामने दे देना। [20]इनसे अधिक जो कुछ तुझे अपने परमेश्वर के भवन के लिये आवश्यक जानकर देना पड़े, वह राज-खजाने में से दे देना।

आयत 14. एज्रा को **राजा और उसके सातों मंत्रियों की ओर से भेजा** गया था। ये लोग स्पष्ट तौर पर राजा के सबसे विश्वासयोग्य सलाहकार थे (देखें एस्तेर 1:13, 14)। हो सकता है कि जिस तरह से राष्ट्रपति का मंत्रिमंडल आज उसकी सहायता करता है, उन्होंने भी इसी प्रकार से उसके लिए काम किया होगा।

एज्रा का जाने का पहला उद्देश्य **कि अपने परमेश्वर की व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है, यहूदा और यरूशलेम की दशा जान ले**, यह स्पष्ट रूप से पहले से ही पुस्तक में लिखा गया था। उसी "व्यवस्था" के विषय आयत 25 में इस प्रकार बात की गई है जो "तेरे परमेश्वर से मिली हुई बुद्धि के अनुसार जो तुझ में है"; इसलिए, व्यवस्था में सम्मिलित है और यहाँ तक कि परमेश्वर की बुद्धि के बराबर भी है। इस "व्यवस्था" के विषय में एज्रा को "दशा जाननी" थी, यह देखने के लिए कि व्यवस्था का पालन किया जा रहा था या नहीं, और फिर यह देखने के लिए कि (जैसा कि पत्र आयत 26 में बताता है) यह देखने के लिए कि इसका पालन किया गया था।

आयतें 15-20. एज्रा की दूसरी जिम्मेदारी धन के साथ थी। इस कार्य में निम्नलिखित बातें सम्मिलित थीं:

1. मंदिर और इसकी सेवाओं के लिए बेबीलोन से यरूशलेम तक भेंट ले जाना। भेंट **चाँदी-सोना, राजा और उसके मंत्रियों ने** अपनी इच्छा से दिया है (7:15), **जितना चाँदी-सोना समस्त बेबीलोन प्रान्त में** से था (7:16) में **जो कुछ लोग और याजक अपनी इच्छा से देंगे**, उनसे मिलकर बनी थी। स्पष्ट तौर पर, राजा द्वारा राजा के धन में से और बेबीलोन के लोगों द्वारा भेंट दी गई थीं, साथ ही साथ बेबीलोन में रहने वाले यहूदियों द्वारा भी भेंट दी गई थीं। इस भेंट से पहले जानवरों, **अन्नबलि और अर्घ की वस्तुओं समेत मोल लेना और उस वेदी पर चढ़ाना, जो तुम्हारे परमेश्वर के यरूशलेम वाले भवन में** (7:17) है। जो कुछ धन बचा था वह एज्रा के विवेक के अनुसार खर्च किया जा सकता था, हालांकि इसे **अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार** वितरित किया जाना था (7:18)।
2. मंदिर में स्थापित होने वाली पूर्ण वस्तुओं **को देने के लिए**। एज्रा को अपने साथ उन पात्रों को ले जाना था, **परमेश्वर के भवन की उपासना के लिये** दिया गया था (7:19)। ये शायद वे पात्र नहीं थे जिन्हें तब ले लिया गया जब नबूकदनेस्सर ने मन्दिर नष्ट कर दिया था, क्योंकि वे पहले ही वापस आ चुके थे (1:7-11)। इस अवसर पर अतिरिक्त भेंट दी गई।
3. मन्दिर की अन्य **आवश्यक** वस्तुओं की पूर्ति की देखरेख करने के लिए। जो आवश्यकताएं उस भेंट के द्वारा पूरी नहीं हुईं जो एज्रा अपने साथ लेकर आया था उसे **राज-खजाने** में से देना था (7:20)।

कार्य के लिए धन (7:21-24)

21"मैं अर्तक्षत्र राजा यह आज्ञा देता हूँ, कि तुम महानद के पार के सब खजांचियों से जो कुछ एज्रा याजक, जो स्वर्ग के परमेश्वर की व्यवस्था का शास्त्री

है, तुम लोगों से चाहे वह फुर्ती के साथ किया जाए। 22अर्थात् सौ किक्कार तक चाँदी, सौ कोर तक गेहूँ, सौ बत तक दाखमधु, सौ बत तक तेल, और नमक जितना चाहिये उतना दिया जाए। 23जो जो आज्ञा स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से मिले, ठीक उसी के अनुसार स्वर्ग के परमेश्वर के भवन के लिये किया जाए, राजा और राजकुमारों के राज्य पर परमेश्वर का क्रोध क्यों भड़कने पाए। 24फिर हम तुम को चिता देते हैं, कि परमेश्वर के उस भवन के किसी याजक, लेवीय, गवैये, द्वारपाल, नतीन या और किसी सेवक से कर, चुंगी, अथवा राहदारी लेने की आज्ञा नहीं है।

आयतें 21-24. महानद के पार के प्रांतों के खजांचियों के लिए राजा द्वारा निर्देश दिए गए थे (7:21)। (1) उन्हें उनके कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक धनराशि प्रदान करनी थी, अर्थात् सौ किक्कार तक चाँदी, सौ कोर तक गेहूँ, **सौ बत तक दाखमधु, सौ बत तक तेल, और नमक जितना चाहिये उतना दिया जाए** (7:22)। आधुनिक समकक्षों के संबंध में, चांदी का अनुमान 3 $^{3}/_{4}$ टन, एक भव्य राशि है। अन्य वस्तुएँ 650 बुशल गेहूं, 600 गैलन दाखमधु और 600 गैलन तेल के बराबर थीं। कीथ एन। शॉविल के अनुसार, "ये मात्रा मन्दिर को लगभग दो वर्षों तक आपूर्ति करेगी।"[9] दाखमधु का उपयोग अर्घ बलि के लिए किया जाएगा और तेल को अन्न बलि के लिए मैदे में मिलाया जाएगा (निर्गमन 29:40)। नमक का उपयोग अन्नबलि (लैव्य. 2:13) के साथ भी किया जाता था। वस्तुओं की यह सूची इंगित करती है कि खजांचियों एज्रा को वह सब देना था जो उसे अपना काम करने के लिए चाहिए था। क्यों? **राजा और राजकुमारों के राज्य पर परमेश्वर का क्रोध क्यों भड़कने पाए** (7:23)। राजा की चिंता और उदारता सराहनीय थी; परन्तु वे भी, एक अर्थ में, स्वार्थी थीं। उनका उद्देश्य इस्राएल के परमेश्वर के कृपादृष्टि को जीतना था ताकि वह उस परमेश्वर से आशीष प्राप्त कर सके (देखें 6:10), जैसे उसने अन्य देवताओं की कृपादृष्टि की खोज की थी। (2) प्रांतों के खजांची मंदिर में सेवा करने वालों - **याजक, लेवीय, गवैये, द्वारपाल, नतीन या और किसी सेवक से कर, चुंगी** - किसी भी प्रकार के करों का भुगतान करने से को छोड़ देना था (7:24) (2:43-54 पर टिप्पणियाँ देखें।)

नियम लागू करने के लिए अधिकार (7:25, 26)

25"फिर हे एज्रा! तेरे परमेश्वर से मिली हुई बुद्धि के अनुसार जो तुझ में है, न्यायियों और विचार करने वालों को नियुक्त कर जो महानद के पार रहनेवाले उन सब लोगों में जो तेरे परमेश्वर की व्यवस्था जानते हों न्याय किया करें; और जो जो उन्हें न जानते हों, उनको तुम सिखाया करो। 26जो कोई तेरे परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की व्यवस्था न माने, उसको फुर्ती से दण्ड दिया जाए, चाहे प्राणदण्ड, चाहे देश निकाला, चाहे माल जब्त किया जाना, चाहे कैद करना।"

आयतें 25, 26. एज्रा को परमेश्वर की व्यवस्था को लागू करने के लिए जो भी अवश्य था उसका उपयोग करना था। उसे **न्यायियों और विचार करने वालों को**

नियुक्त करने के लिए कहा गया था जो **परमेश्वर की व्यवस्था जानते** थे, और जो जो उन्हें न जानते हों, उनको उन्हें सिखाना था। कोई परमेश्वर की व्यवस्था और राजा की व्यवस्था न माने, उसको फुर्ती से दण्ड दिया जाए, चाहे प्राणदण्ड, चाहे देश निकाला,[10] चाहे माल जब्त किया जाना, चाहे कैद करना।

कुछ लोगों ने इन शब्दों का अर्थ यह निकाला है कि अर्तक्षत्र ने एज्रा को पूरे प्रान्त का अधिपति नियुक्त किया था, उसे सभी पर अधिकार दिया (सम्भवतः उसका अधिकार के समान जो फ़िरौन को यूसुफ मिस्र पर दिया था), और परमेश्वर की व्यवस्था - मूसा की व्यवस्था - को देश की व्यवस्था बना दिया, जिसका महत्व फारसी राजा के नियमों बराबर था।[11] इस व्याख्या के द्वारा, एज्रा ने प्रान्त के सभी लोगों, यहूदियों और अन्यजातियों पर मूसा की व्यवस्था का पालन करने के लिए समान रूप से लागू किया होगा। यह दृश्य असम्भव प्रतीत होता है।

विल्हेम रूडोल्फ ने कहा कि यह आज्ञा यहूदी समुदायों में यहूदी व्यवस्था लागू करने की अनुमति दे रही थी, न कि मुकदमा चलाने की। उन्होंने संकेत दिया कि एज्रा को उन यहूदियों को शिक्षा देनी थी, जो एक अन्यजातीय आबादी के बीच रह रहे थे, उन्होंने व्यवस्था[12] को त्याग दिया था। अन्य टिप्पणीकारों को भी लगता है कि एज्रा के पास राजनीतिक शक्ति के साथ-साथ धार्मिक जिम्मेदारियां भी थीं।[13] सबसे अधिक इसकी सम्भावना है कि, जो "राजनीतिक शक्ति" उसे दी गई थी वह व्यवस्था को लागू करने की शक्ति थी - इस सीमा तक कि मृत्यु दण्ड के योग्य मामलों में मृत्यु दण्ड का उपयोग करने के द्वारा, चाहे यह "परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध हो या राजा की व्यवस्था के विरुद्ध हो।" इसका अर्थ यह है कि एज्रा के पीछे फारसी सरकार का अधिकार था।[14] इसलिए एज्रा पर मूर्तिपूजा (निर्गमन 22:20; लैव्य. 20:2-5; व्यव. 13:1-18) और व्यभिचार (लैव्य. 20:10; व्यव. 22:22) जैसे अपराध के लिए दोषी लोगों को मृत्युदण्ड देने की जिम्मेदारी रही होगी।

यह असम्भव है कि परमेश्वर किसी राजा के अन्यजातीय लोगों को इस्राएल को मूसा के माध्यम से दी गई व्यवस्था का पालन करने के लिए विवश करने देगा।[15] आगे, एज्रा की कार्य उसके पहुँचने के बाद एक अधिपति के नहीं, बल्कि एक धार्मिक सुधारक के थे। एज्रा ने इस समाचार के उत्तर में कि लोगों ने अन्यजातियों के साथ अंतरजातीय विवाह किया था, अपने वस्त्र फाड़ दिए, बैठने के लिए, अंगीकार करने के लिए, और प्रार्थना करने के लिए (9:1-15), एक आधिकारिक आदेश जारी करने के लिए नहीं, जैसा कि एक अधिपति ने किया होता। किया हुआ। सम्भवतः अर्तक्षत्र इसके प्रावधानों के अनुसार एज्रा **महानद के पार[16] के** यहूदियों के बीच शिक्षा देने और व्यवस्था को लागू करने का अधिकार प्रदान कर रहा था।

एज्रा द्वारा परमेश्वर की स्तुति (7:27, 28)

[27]धन्य है हमारे पितरों का परमेश्वर यहोवा, जिसने ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न की है, कि यरूशलेम स्थित यहोवा के भवन को सँवारे, [28]और मुझ पर

राजा और उसके मंत्रियों और राजा के सब बड़े बड़े हाकिमों को दयालु किया। मेरे परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो मुझ पर हुई, इसके अनुसार मैं ने हियाव बाँधा, और इस्राएल में से मुख्य पुरुषों को इकट्ठा किया कि वे मेरे संग चलें।

अर्तक्षत्र के पत्र के बाद (7:11-26) पुस्तक का वह भाग आता है जिसे कभी-कभी "एज्रा का संस्मरण" (7:27-8:34; 9:1-15) कहा जाता है। 7:27-8:34 में, हमें एज्रा के यरूशलेम की यात्रा का पहला व्यक्ति और उसके सुरक्षित आगमन का विवरण दिया गया है, जो पाँचवीं शताब्दी ई.पू. के मध्य में हुआ था। तात्पर्य यह है कि उसका सुरक्षित पहुँचना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, जब तक 7:1-10 यह नहीं बताता कि वह लौट आया। एज्रा ने उस भाग में बुनियादी बातों को बताया और फिर यात्रा का अपना व्यक्तिगत जानकारी को लिखा, जिसकी शुरुआत 7:27, 28 से होती है। यह अतिरिक्त जानकारी बताती है कि एज्रा ने राजा के आदेश को कैसे पूरा किया।

आयतें 27, 28. एज्रा ने अपनी बात परमेश्वर को धन्यवाद और प्रशंसा के शब्दों के साथ शुरू किया: **धन्य है हमारे पितरों का परमेश्वर यहोवा** (प्राचीन - अब्राहम, इसहाक, और याकूब और इस्राएल राष्ट्र का परमेश्वर)। उसने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने **ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न की है, कि यरूशलेम स्थित यहोवा के भवन को सँवारे**। इसके बाद उसने प्रभु की **कृपादृष्टि** के लिये राजा के सकारात्मक निर्णय को महत्वपूर्ण ठहराया, जो उसे **राजा और उसके मंत्रियों और राजा के सब बड़े बड़े हाकिमों के सामने** [देखें 7:14] **दिखाया** गया। "एक बार फिर," लेस्ली सी. एलन ने कहा, "परमेश्वर ने पहले कार्य के रूप में मन्दिर के लिये एक फारसी राजा को प्रेरित किया।"[17]

प्रस्तुत विवरण से लगता है कि राजा एज्रा को जानता था और उसकी प्रशंसा करता था, उसने राजा के सब बड़े बड़े हाकिमों की उपस्थिति में राज सिंहासन के सामने जाना अनिवार्य समझा और विनम्रतापूर्वक यरूशलेम जाने की अनुमति माँगी, ताकि वह यहूदियों की आत्मिक अगुवे की आवश्यकता को पूरा कर सके। शायद राजा के निर्णय को सुनने के लिये उसे कुछ दिनों तक शंका में रहना पड़ा। फिर, अन्ततः जब उसे वह अनुमति मिली और राजा का पत्र उसके हाथ में आया, तो वह स्वयं को रोक नहीं सका: उसका हृदय धन्यवाद के साथ उमड़ने लगा, और जिस तरह से परमेश्वर ने उसपर "कृपादृष्टि" दिखाई थी, उसकी प्रशंसा करने लगा। वह कहने लगा "धन्य है यहोवा।"

न केवल एज्रा ने यहोवा की स्तुति की, बल्कि उसने तुरंत अपनी योजनाओं को अमल में लाना शुरू कर दिया। उस पर **यहोवा का हाथ** होने के साथ, उसने अपनी यात्रा पर उसके साथ जाने के लिये **इस्राएल में से मुख्य पुरुषों को इकट्ठा किया।** अध्याय 8 स्पष्ट बताता है कि वे लोग कौन थे।

अनुप्रयोग

परमेश्वर का भय माननेवाले अगुवा का गुण (अध्याय 7)

कभी-कभी किसी धर्म को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता होती है। यह उन लोगों का दृष्टिकोण था, जिन्होंने प्रोटेस्टेंट पुनर्स्थापना को शुरू किया: रोमन कैथोलिक चर्च भ्रष्ट हो चुका था और उसे पुनः स्थापित करने की आवश्यकता थी। यद्यपि, यह न तो धर्म में सुधार का पहला और न ही अन्तिम प्रयास था। लगभग हर धार्मिक समूह ने किसी न किसी समय इसमें नवीनीकरण, जागृति और सुधार के लिये दृढ़ संकल्पित अगुवों को पाया है।[18]

एज्रा की पुस्तक दूसरी छमाही में, हम एक "पुनर्स्थापना आन्दोलन" के बारे में पढ़ते हैं, इस तरह के अन्य आंदोलनों की तरह, यहाँ भी धर्म के पहले उत्साह को फिर से प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। इसका नेतृत्व एक उत्साही सुधारक ने किया था - एज्रा जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों को अपनी व्यवस्था में वापस लाने के लिये बुलाया था।

यह अकसर कहा जाता है कि कलीसिया को आज एक जागृति की आवश्यकता है। हम कभी-कभी गाते हैं, "हमें फिर से जागृत करो!"[19] अगर हमें पुनर्जागृति की आवश्यकता है, तो हम उसे कैसे पा सकते हैं? हमें किसी पुरुष या पुरुषों पर भरोसा करना चाहिए, जैसे कि एज्रा को इसे प्राप्त करने में मदद सहायता के लिये चुना गया। हम उसके समान कैसे बन सकते हैं?

आइए सबसे पहले उस समय पर विचार करें जिस समय में एज्रा हुआ करता था - उसकी कहानी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि - और फिर उन गुणों पर विचार करें, जिसने एज्रा को पुनर्जागृति का एक आदर्श अगुवा बनाया।

अध्याय 6 के अन्त के साथ, एज्रा की पुस्तक का पहला भाग समाप्त होता है। उन छः अध्यायों में दो विषयों पर ध्यान दिया गया है: पहली यहूदियों की बँधुआई से वापसी और फिर मन्दिर का पुनर्निर्माण। एज्रा की पुस्तक के दूसरे भाग में, हम एज्रा के साथ यहूदियों का उनकी भूमि में वापस आने और पुनर्स्थापना जो उसने किया उसके बारे में जान पाते हैं। नहेम्याह की पुस्तक नहेम्याह के साथ उनकी तीसरी वापसी और यरूशलेम के चारों ओर की दीवार के पुनर्निर्माण के बारे में बताती है।

एज्रा का अध्याय 6 पुनर्निर्मित मन्दिर के समर्पण के साथ सम्पन्न होता है, एक घटना जिसकी तिथि 516 ई.पू. के आसपास बताई जा सकती है। अध्याय 7 एज्रा के अधीन यहूदा के लिये उनकी वापसी के साथ लगभग 458 ई.पू. में शुरू होता है। यहूदा के निवासियों के लिये अध्याय 6 और 7 के बीच, लगभग साठ साल बीत गए। हम यहूदा में उन वर्षों के दौरान क्या हुआ, इस बारे में कुछ नहीं जानते, सिवाय इसके कि एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकों और भविष्यद्वाणी की पुस्तकों से हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं।[20]

ऐसा प्रतीत होता है कि यहूदी, उन साठ वर्षों के दौरान, परमेश्वर के मार्ग से

भटक गए थे। हम जानते हैं कि उन्होंने उस देश के लोगों के साथ अन्तरविवाह किया था, इसलिये एज्रा और नहेम्याह दोनों को उस समस्या से निपटना था। लौट आने पर एज्रा का कार्य परमेश्वर की व्यवस्था को सिखाना था। उसके द्वारा सिखाए जाने वाले कथन का तात्पर्य यह है कि वे परमेश्वर के नियम को भूल गए या उपेक्षित उसका पालन नहीं गए। हम कह सकते हैं उनके उत्साह मंद हो गए थे। मन्दिर के निर्माण के समय जो ज्योति इतनी चमकदार थी वह लगभग बुझ चुकी थी। परमेश्वर के लोगों को उस आग को फिर से जलानेवाले मनुष्य की आवश्यकता थी - और एज्रा वह मनुष्य था! जिस तरह परमेश्वर ने हमेशा अपने काम को पूरा करने के लिये किसी को ऊपर उठाया है, परमेश्वर ने इस अवसर के लिये एज्रा को उठाया। एज्रा किस प्रकार का मनुष्य था?

एज्रा एक प्रसिद्ध व्यक्ति था, जिसका बहुत सम्मान किया जाता था। उसके वंशजों के कारण उसका सम्मान किया जाता था। जब बाइबल में पुरुषों के नाम दिखाई देते हैं, तो अकसर बाइबल के लेखक हमें बताते हैं कि वे किसके वंशज थे। इसलिये, बाइबल शायद ही किसी को उसके परिवार की सोलह पीढ़ियों का पता लगाकर उसका परिचय देती है, जैसा कि हम एज्रा की वंशावली में देखते हैं।[21] यह एक साथ दो बातों को पूरा करता है: यह एज्रा के महत्व को पाठक को सूचित करता है, और यह एज्रा के महत्व को इस्राएल के इतिहास में कुछ महान नामों से जोड़ने पर जोर देता है, विशेष रूप से एलीआज़र और हारून के नाम। एज्रा के वंश की सूची इंगित करती है कि वह एक याजक होने के साथ-साथ एक शास्त्री भी था (देखें 7:11)।

एज्रा अपने कौशल के कारण भी प्रभावशाली था। उसे "मूसा की व्यवस्था के विषय, जिसे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने दी थी, निपुण शास्त्री" (7:6) के रूप में वर्णित किया गया है। शास्त्री वे कार्यकर्ता थे जिन्होंने पुराने नियम की पुस्तकों की नकल की थी। क्योंकि उन्होंने व्यवस्था की नकल करते हुए अपने दिन बिताए, वे इस बात को अच्छी तरह से जानते थे। इसलिये, वे न केवल नकल करने वाले के रूप में जाने जाते थे, बल्कि व्यवस्था के विशेषज्ञ और शिक्षकों के रूप में भी जाने जाते थे। एज्रा को एक शास्त्री होने की मान्यता दी गई थी, परन्तु वह केवल एक शास्त्री नहीं; बल्कि "कुशल" शास्त्री था। उसका वर्णन राजा ने इस प्रकार किया गया, वह जो "जो यहोवा की आज्ञाओं के वचनों का, और उसकी इस्राएलियों में चलाई हुई विधियों का शास्त्री था" (7:11)।

इसके अलावा, एज्रा फारसी राजा का प्रिय व्यक्ति था, जिसने उसे उसका मुँह माँगा वर दिया था (7:6)। राजा ने आदेश जारी किया जिसने एज्रा को वापस जाने की अनुमति दी, दूसरों को उसके साथ लौटने की अनुमति दी, एज्रा को चाँदी और सोने की जिम्मेदारी सौंपी जिसे राजा ने यहोवा के लिये देने को चुना था, और यह निर्णय सुनाया कि उस देश के लोग कार्य करने में एज्रा का सहायता करें और उनकी शिक्षाओं का पालन करें (7:11-26)। स्पष्ट है कि, राजा ने एज्रा के बारे में बहुत दूर तक सोचा।

अन्त में, एज्रा को परमेश्वर ने आशीष दिया। फारसी राजा के निर्णय और

लौटने वालों के सुरक्षित आगमन का श्रेय परमेश्वर को दिया जाना था। फिर से, 7:6 कहता है, "और उसके परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो उस पर रही, इसके कारण राजा ने उसका मुँह माँगा वर दे दिया।" अध्याय के अन्त में, हम देखते हैं कि एज्रा ने परमेश्वर को महिमा दी: "धन्य है ... यहोवा, जिसने ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न की है, ..." (7:27)।

एज्रा वास्तव में एक जाना माना व्यक्ति था। वह अपने वंश, अपने कौशल, फारसी राजा के साथ अपने सम्बन्धों और विशेष रूप से परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्धों के लिये जाना जाता था।[22]

हम समान रूप से प्रसिद्ध होना पसंद कर सकते हैं। निःसन्देह, मानवीय दृष्टिकोण से, हम सभी के लिये यह सम्भव नहीं है कि हम अपने समय के समाचार निर्माताओं के समान जाने जाएँ या उन व्यक्तियों के समान जिनके बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं। फिर भी, परमेश्वर हम में से प्रत्येक को जानता है और हमें ग्रहण करता है। जब सत्तर चेले यीशु के पास वापस आए तो आनन्दित हुए कि दुष्टात्मा उनके अधीन थे, यीशु ने उत्तर दिया, "तौभी इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं" (लूका 10:20)। यूहन्ना ने सबसे बड़ी प्रसिद्ध बात कही, जो किसी भी मनुष्य के पास हो सकता है जब उसने लिखा, "देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ; और हम हैं भी" (1 यूहन्ना 3:1)। उस तरह के विशेषाधिकार रखनेवाला व्यक्ति वास्तव में धन्य है; वह प्रसिद्धि पानेवाला मनुष्य है।

एज्रा दृढ़ इच्छा रखनेवाला व्यक्ति था। 7:10 में, हमने उनके दृढ़ इच्छा के बारे में पढ़ा: "क्योंकि एज्रा ने यहोवा की व्यवस्था का अर्थ जान लेने, और उसके अनुसार चलने, और इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये अपना मन लगाया था।" एज्रा ने परमेश्वर के लिये महान काम कर दिखाए क्योंकि उसने परमेश्वर के लिये महान काम करने का दृढ़ निश्चय किया था। उसकी इस दृढ़ इच्छा का उपयोग आज के समय में परमेश्वर के लोगों के लिये एक नमूना के रूप में किया जा सकता है।

एज्रा ने पहले दृढ़ निश्चय किया, "यहोवा की व्यवस्था का अर्थ जान लेने।" एज्रा का यहोवा की व्यवस्था का ज्ञान आश्चर्यजनक रीति से नहीं आया; उसे प्राप्त करने के लिये उसने शिक्षा प्राप्त की। और इसी कार्य को करने के लिये ही उसने दृढ़ निश्चय किया।

दूसरा, एज्रा ने निर्णय किया कि "इसका अभ्यास करें।" उसने व्यवस्था का अर्थ जानने की योजना सिर्फ इसलिये नहीं बनाई कि वह उसे जान सके - कि वह उसे अपनी स्मृति में रख सके या अपने दोस्तों को इस अवसर पर अपना ज्ञान दिखा सके। एज्रा ने व्यवस्था का अर्थ जानने की इच्छा इसलिये किया ताकि वह "उसका अभ्यास कर सके," ताकि वह उस पर चल सके, या इसका पालन कर सके। यह परमेश्वर के वचन को सीखने का सबसे अच्छा उद्देश्य है।

तीसरा, एज्रा ने "इस्राएल में विधि और नियम सिखाने के लिये" दृढ़ निश्चय किया। यह एज्रा की विशेष जिम्मेदारी थी - विशेष कार्य जिसके लिये परमेश्वर ने

एज्रा को बुलाया था। इसलिये, एज्रा ने योजना बनाई न केवल परमेश्वर के वचन को जानने का, और न केवल उसे पूरा करने का, बल्कि उसे सिखाने का भी।

जिस रीति से एज्रा को इस काम के लिये बुलाया गया था हमें उस रीति से सिखाने के लिये नहीं बुलाया जाता है। फिर भी, हम सभी कुछ हद तक दूसरों को सिखा सकते हैं। माता-पिता के रूप में, हमें अपने बच्चों को सिखाना चाहिए। बूढ़ी स्त्रियों को जवान स्त्रियों को सिखाना चाहिए (तीतुस 2:4)। हमारी बाइबल कक्षाओं में, हममें से कई लोगों के पास बच्चे और जवान दोनों को सिखाने का अवसर मिलता है। बूढ़ों को सिखाना है (1 तीमु. 3:2)। उपदेशकों को सिखाना है (2 तीमु. 2:2, 24)। यहाँ तक कि यदि हम इनमें से किसी भी तरीके से नहीं सिखाते हैं, तो हम सभी के पास यह जानने का अवसर है कि हम दूसरों के साथ परिवार के सदस्यों के साथ, रिश्तेदारों के साथ, पड़ोसियों के साथ, मित्रों के साथ, सहकर्मियों के साथ क्या सीखते हैं। हमें स्वयं को तैयार करना चाहिए ताकि जैसे-जैसे हमारे पास अवसर आएँगे, हम दूसरों के साथ बाइबल की कही गई बातों के बारे में बात कर पाएँगे।

सिखाने से और भी अधिक सीखते हैं। सिखाने की इच्छा बाइबल के बारे में अधिक जानने की इच्छा को बढ़ावा देती है। जब हम दूसरों के साथ परमेश्वर के वचन के बारे में अपनी समझ साझा करने का प्रयास करते हैं, तो उनके प्रश्न हमें और भी अधिक जानने के लिये बाइबल की ओर वापस ले चलते हैं। वचन में समय व्यतीत होने पर, जो हमने दूसरों के साथ सीखा है, उसे साझा करने के लिये अपना उत्साह बढ़ाएँ-और इस तरह यह चक्र चलता रहता है। एज्रा की तरह, आइए हम भी "यहोवा की व्यवस्था का अर्थ जान लेने, और उसके अनुसार चलने, और विधि और नियम सिखाने के लिये" (7:10) दृढ़ निश्चय करें।

एज्रा आदर के योग्य एक मनुष्य था। अध्याय 7 का अधिकांश भाग राजा अर्तक्षत्र के पत्र की एक प्रति है जो एज्रा को अपना काम करने के लिये अधिकृत करता है। पत्र में ये प्रावधान रखे गए थे: (1) कोई भी यहूदी जो एज्रा (7:13) के साथ वापस जाना चाहता था, जा सकता था। (2) एज्रा को सिखाना था कि "अपने परमेश्वर की व्यवस्था के विषय जो तेरे पास है, यहूदा और यरूशलेम की दशा जान ले" (7:14)। दूसरे शब्दों में, एज्रा का काम यह सुनिश्चित करना था कि यहूदियों द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया जा रहा है। (3) एज्रा को फारसी राजा से महंगे उपहार मिलने वाले थे, साथ ही मन्दिर के लिये यहूदियों से स्वेच्छा से दिए भेंट भी मिलने वाला था। उसे इन उपहारों का उपयोग बलिदान के चढ़ावे के लिये करना था। इसके अतिरिक्त, फारसी राजा अपने खजाने से किसी भी प्रकार का अतिरिक्त धनराशि भी प्रदान कर सकता था, और स्थानीय शासकों को निर्देश दिया गया था कि वे अपने भण्डार गृहों से यहूदियों को जो कुछ भी आवश्यक हो दें (7:20-22)। (4) याजक और मन्दिर के कर्मी करों से मुक्त थे (7:24)। (5) एज्रा को पुरुषों को न्यायी के रूप में नियुक्त करके और व्यवस्था को सिखाने (7:25) के द्वारा परमेश्वर की व्यवस्था को लागू करना था। (6) जो कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था या राजा के नियम को का पालन नहीं करता था उसे

दण्डित किया जाता था, उसे मार डाला जाता था, भगा दिया जाता था, उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली जाती थी, या बन्दी बना लिया जाता (7:26) था।

एज्रा ने इन शब्दों के साथ फारसी राजा के आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति का उत्तर दिया:

> धन्य है हमारे पितरों का परमेश्वर यहोवा, जिसने ऐसी मनसा राजा के मन में उत्पन्न की है, कि यरूशलेम स्थित यहोवा के भवन को सँवारे, और मुझ पर राजा और उसके मंत्रियों और राजा के सब बड़े बड़े हाकिमों को दयालु किया। मेरे परमेश्वर यहोवा की कृपादृष्टि जो मुझ पर हुई, इसके अनुसार मैं ने हियाव बाँधा, और इस्राएल में से मुख्य पुरुषों को इकट्ठा किया कि वे मेरे संग चलें (7:27, 28)।

एज्रा का पहला विचार, स्पष्ट रूप से, जब उसे अर्तक्षत्र से अनुरोध किया गया सब कुछ प्राप्त हुआ, तो वह परमेश्वर को उसके आशीष के लिये धन्यवाद देना चाहता था। उनकी स्थिति को देखते हुए, हम कह सकते हैं कि, "क्या सौभाग्य है!" या "जब मैं राजा के पास गया था तो मैं बहुत दृढ़ हो कर गया था!" या "राजा निश्चित रूप से एक अच्छी मनः स्थिति में था जब उससे हमने अनुरोध किया!" परन्तु एज्रा का एक अलग दृष्टिकोण था: उसने राजा की भली इच्छा में परमेश्वर के कार्य को देखा। एज्रा के घर लौटने के अनुरोध के प्रति उसकी स्वीकृति, और उसके प्रयासों को सफल बनाने में सहायता करने में उसके निर्णय के लिये राजा के मन को नम्र करने में परमेश्वर का हाथ शामिल था। इसलिये, जब एज्रा और अन्य लोग जो वापस लौट आए और उनके लिये बातें उनके अनुरूप हो गईं तो किसी और की तुलना में, परमेश्वर को धन्यवाद दिया गया और प्रशंसा की गई। परमेश्वर की सहायता के कारण, एज्रा यहूदी धर्म की पुनर्स्थापना में अग्रणी रहा।

उपसंहार। यदि हमें आज कलीसिया में जागृति की आवश्यकता है, तो किस प्रकार के मनुष्य उस जागृति का नेतृत्व करने में सक्षम होंगे? उन्हें एज्रा की समान मनुष्य होना चाहिए: वे मनुष्य जिन्हें परमेश्वर जानता है और स्वीकृति देता है; दृढ़ निश्चय वाले मनुष्य, परमेश्वर की व्यवस्था का अर्थ जाननेवाले, उसपर चलनेवाले और दूसरों को उसे सिखानेवाले; आदर के योग्य, परमेश्वर की उपस्थिति और शक्ति को स्वीकार करने के लिये तैयार और उसे उसके अनुग्रह के आशीषों के लिये लगातार धन्यवाद देने वाले हों! पाँचवीं सदी ईस्वी पूर्व में परमेश्वर यदि एज्रा का उपयोग कर सकता था; तो वह इक्कीसवीं सदी के सत्र में हमारा भी उपयोग कर सकता है। परमेश्वर चाहता था कि कोई उनके लोगों के भीतर आग जलाए; उसने एज्रा का उपयोग किया। आज परमेश्वर के लोगों के मनों में आग कौन जलाएगा?

परमेश्वर का हाथ (7:6, 9, 28)

एज्रा 7 में तीन बार, हमने पढ़ा कि परमेश्वर का "हाथ" (7:6, 9, 28) एज्रा पर था। परमेश्वर ने उसकी इच्छा को पूरा करने के लिये उसकी रक्षा की और उसे

बलवन्त किया।

परमेश्वर के "हाथ" की कल्पना में परमेश्वर की मानव विशेषताओं का वर्णन करते हुए, मानवीय भाषा का उपयोग किया गया है। यह वाक्यांश परमेश्वर की चिन्ता और मानवीय मामलों पर उसके नियंत्रण को व्यक्त करता है, और यह एक उत्साहजनक कल्पना है। हमें स्मरण दिलाया जाता है कि जैसे-जैसे हम बड़े हो रहे थे, हमारे अपने माता-पिता के हाथों ने हमें कैसे सम्भाला और सहायता की। कई वर्षों से लोकप्रिय एक गीत कहता है, "उसके हाथों में पूरा संसार है।" वास्तव में, परमेश्वर के हाथों में "पूरा संसार" है, और वह अपने लोगों की चिन्ता करता है और देखता है कि उसकी इच्छा पूरी हो गई है। हम प्रभु का धन्यवाद कर सकते हैं कि उसके हाथ वास्तव में "अच्छे" (7:9) हैं।

हमें परमेश्वर के हाथों के रूपक संदर्भ के दूसरे पहलू को पहचानना चाहिए। एक पिता के हाथों का उपयोग न केवल प्रोत्साहन और स्नेह दिखाने के लिये किया जाता है बल्कि अपने गलत मार्ग में जा रहे बच्चों पर डाँटने और उन्हें दण्डित करने के लिये भी किया जाता है। उसी तरह, परमेश्वर के हाथों को अनुमानित रूप से देखा जा सकता है, जिसका अर्थ है कि वह उन्हें बुरा करनेवालों को दण्डित करने के लिये उपयोग करता है। जब हम उसके हाथों को इस तरह के दृष्टिकोण से देखते हैं, तो हमें उस बात को स्वीकार करना चाहिए, जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने कहा, "जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है" (इब्रा. 10:31)।

एज्रा का दृढ़ निश्चय (7:10)

एज्रा 7:10 नए वर्ष की सीख के लिये एक उत्कृष्ट पाठ प्रदान करता है। आम तौर पर नया वर्ष संकल्प लेने का एक समय होता है, इस बारे में बात करने के बाद, शिक्षक एज्रा के दृढ़ निश्चय का उल्लेख कर सकता है क्योंकि उसका अनुकरण करना सभी मसीहियों के लिये एक अच्छा उदाहरण है। हम सभी को (1) परमेश्वर के वचन का "अध्ययन करने," (2) उसपर "चलने" और (3) दूसरों को "उसे सिखाने के लिये" दृढ़ निश्चय करना चाहिए।

समाप्ति नोट

[1]इस समय के दौरान एस्तेर की पुस्तक की घटनाएँ हुईं और यहूदा के निवासियों को प्रभावित किया; परन्तु एज्रा की पुस्तक के लेखक ने उनका उल्लेख नहीं किया। [2]कुछ लोगों का मानना है कि जिस अर्तक्षत्र की बात की गई है वह अर्तक्षत्र द्वितीय था। इस मामले में, एज्रा की यरूशलेम यात्रा की तिथि लगभग 398 ई.पू. रही होगी। [3]1 इतिहास 6:3-15 में वंशावली, जो कि अधूरी भी है, हारून से बन्धुआई में जाने तक तेईस पीढ़ियों को सूचीबद्ध करती है। [4]राल्फ डब्ल्यू. क्लाइन, "एज्रा," इन *हार्परस बाइबल कमेंट्री* एडिटर जेम्स एल. मेय्स (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एंड रो, 1988), 376. [5]एडविन एम. यमूची, "एज्रा-नहेम्याह," इन *द एक्सपोजिटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रैंक ई. गैब्लिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 649. [6]उपरोक्त, 650. [7]चार्ल्स टी. फ्रिट्च, "द बुक ऑफ एज्रा," *द इंटरप्रेटर्स वन-वॉल्यूम कमेन्ट्री ऑन द बाइबल*, एड. चार्ल्स एम. लेमोन (नैशविल: एबिंगडन प्रेस, 1971), 225. [8]डेरेक किडनर, *एज्रा*

एण्ड नहेम्याह, द टिंडेल ओल्ड टेस्टमेंट कमेंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1979), 63. [9]कीथ एन. शॉविल, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रेस एनआईवी कमेंट्री (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग को:, 2001), 103-4. [10]देश निकाला (שְׁרֹשִׁ *,शे'रोशू)* शब्दिक तौर पर “उखाड़ फेंकना” है।

[11]उदाहरण के लिए, जेम्स बर्टन कॉफमैन ने लिखा है कि अर्तक्षत्र के पत्र ने “एज्रा को महानद के पार पूरे फारसी प्रांत में लगभग निरंकुश शक्ति प्रदान की। इसके अलावा ... यह राजा की व्यवस्था साथ ही मूसा की व्यवस्था को भी देश की सर्वोच्च व्यवस्था के रूप में मान्यता प्रदान करता है, जिसे यहाँ एक और एक ही बात के रूप में समझा गया है” (जेम्स बर्टन कॉफमैन एण्ड थेलमा बी. कॉफमैन, *कमेंट्री ऑन एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर*) [अबिलीन, टेक्सास: एसीयू प्रेस, 1993], 66)। [12]विल्हेल्म रूडोल्फ, *एज्रा एण्ड नहेम्याह* (तुबिंगेन: जे. सी. बी. मोह्र, 1949), 74. [13]जैकब एम. मायर्स, *एज्रा, नहेम्याह*, एंकर बाइबल, वॉल्. 14 (गार्डन सिटी, न्यू योर्क: डबलडे एंड कंपनी, 1965), 60-61. [14]उपरोक्त, 62-63. [15]उनके इतिहास में कुछ समयों पर (विशेषकर इन्टरटेस्टमेंटल काल में), यहूदियों ने अन्यजातियों को यहूदी धर्म को यहूदी धर्म में “परिवर्तित” होने के लिए विवश किया; परन्तु स्वयं व्यवस्था (और शायद स्वयं परमेश्वर ने) ने इस तरह की प्रथा को कभी मंजूरी नहीं दी। सच्चे परमेश्वर को स्वीकार करने, यहूदियों से जुड़ने, और परमेश्वर के लोगों के इस्राएल का भाग'बनने के लिए अन्यजातियों का सदैव स्वागत था। हालाँकि, इस तथ्य ने यहूदियों को कभी भी मूसा की व्यवस्था के नियमों को पालन करने के लिए विवश करने के लिए अधिकृत नहीं किया। [16]“जिन्होंने स्वयं को परमेश्वर की व्यवस्था से परिचित होने और उसके अधीन होने का परिचय दिया, वे उन विचारकों और न्यायियों के अधिकार क्षेत्र में थे, जिन्हें एज्रा नियुक्त करता था। इसमें ... ट्रांस-यूफ्रेट्स [ग्रेटेस्ट सीरिया] के समस्त क्षेत्र के यहूदी भी सम्मिलित थे” (शॉविल, 104)। [17]लेस्ली सी. एलन एण्ड टिमोथी एस. लानीक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कॉमेन्टरी टिप्पणी (पीबॉडी, मेस्साच्यूसेट्स: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 2003), 59. [18]उदाहरण के लिये जॉन और चार्ल्स वेस्ले, इंग्लैंड की कलीसिया को पुनर्स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे, जब उन्होंने 1740 के दशक में मेथोडिस्ट चर्च को शुरूवात करने में सहायता की। [19]विलियम पी. मैकके, “वी प्रेज दी, ओ गॉड,” *सोंग्स ऑफ द चर्च*, कम्पो. एण्ड एड. एल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मुनरो, लुसियानाः हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1977). [20]हम एस्तर की पुस्तक में जिन घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं वे इस समय के दौरान फारस में हुए थे।

[21]कुछ पीढ़ियों को इस सूची से बाहर रखा गया है। [22]यहूदी परम्परा एज्रा और उसके साथ काम करनेवाले शास्त्रियों को पुस्तकों का संग्रह का कार्य भी सौंपती है जो पुराने नियम का निर्माण करती है।